Topic-6 ① गुण संधि तथा तपर परिभाषा (xi)

अदेङ् गुणः

अत् एङ् च गुणसंज्ञः स्यात् ।

तपरस्तत्कालस्य ।

~~वृत्ति:~~ तः परो यस्मात् स च — तात्परश्चोच्चार्यमाणसमकालस्यैव संज्ञा स्यात् ।

जिस अविधीयमान 'अण्' — (अ, इ, उ, ऋ, लृ, ए, ओ, ऐ, औ, ह्, य, व्, र्, ल्) के पहले या बाद में तकार होता है, वह अविधीयमान अण् अपना तथा अपने समान उच्चारणकालवाले सवर्णों का ही बोध कराता है, सभी सवर्णों का नहीं ।

ह्रस्वकार अपने छह समकालिक सवर्णों का बोधक होता है।

आद् गुणः ।

अवर्णादचि परे पूर्वपरयोरेको गुण आदेशः स्यात् । उपेन्द्रः । गंङ्गोदकम् ।

इस सूत्र के दो अपवाद हैं

वृद्धिरेचि - ६. १. ८८ तथा

अकः सवर्णे दीर्घः - ६,१,१०१

गंगोदकम्

= गंगा + उदकम्

गंग् + ओ + दकम्

गंगोदकम्

मूल स्थिति

आ और उ कार को गुण एकादेश ।